The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 12-15, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन : सर्जना कर्म बनाम राज्य संरक्षण

डॉ. रजनीश कुमार यादव[1]

1. सहायक प्राध्यापक, राजेंद्र कॉलेज, छपरा, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

शोध सारांश

स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन दोनों नाटकों के प्रकाशन वर्षों के बीच लगभग तीस वर्षों का अंतर है। जहां स्कंदगुप्त स्वाधीनता के पहले का है और उसके ऊपर छायावादी कविता का प्रभाव दिखाई पड़ता है वहीं आषाढ़ का एक दिन स्वाधीनता के बाद का है और उसके ऊपर नई कविता का प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार दोनों नाटक दो काव्यांदोलनों के छोर को निर्धारित करते हैं। स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन दोनों नाटकों में सर्जनात्मक कर्म का उल्लेख किया गया है । जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश ने अपने नाटकों के माध्यम से सर्जना कर्म और राज्य सत्ता दोनों का तुलनात्मक रूप से चित्रण किया है।

स्कंदगुप्त नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक होते हुए भी वह इस अर्थ में समकालीन है कि उसे प्रसाद में अपने समय की राष्ट्रीय स्थितियों से प्रेरित होकर लिखा है । राष्ट्र उत्थान की भावना इस नाटक की मूल चिंता है। पराधीनता से राष्ट्र मुक्ति और इसके लिए सामूहिक प्रयत्न को उन्होंने प्रस्तुत किया है जिसमें मातृगुप्त का चरित्र सामने उभर कर आता है । आषाढ़ का एक दिन का कालिदास भावना में होते हुए भी व्यवहारवादी नजर आता है । वह इस अर्थ में समकालीन है कि स्वतंत्रता के बाद विकसित हो रहे उपभोक्तावादी मध्य वर्ग का प्रतिनिधि है । उसे स्त्री–पुरुष संबंध को लेकर द्वंद्व है । राज सत्ता और सर्जक सत्ता में भी द्वंद्व है । इसके माध्यम से मोहन राकेश ने सामाजिक संबंधों में होने वाले बदलाव को चित्रित करने का प्रयास किया है । साथ ही स्त्री–पुरुष संबंधों को दिखाने का प्रयास किया गया है । स्वतंत्र भारत का मध्य वर्गीय संघर्ष जिसमें खालीपन, कटुता, अलगाव और अकेलापन शेष रह जाता है । इसी को आषाढ़ का एक दिन की विषय–वस्तु बनाकर मोहन राकेश ने प्रस्तुत किया दोनों चरित्रों की तुलना करने पर आषाढ़ का एक दिन का नायक कालिदास समकालीन परिदृश्यों में अधिक प्रासंगिक जान पड़ता है।

शोध बीज बिंदु: स्कंदगुप्त, आषाढ़ का एक दिन, सर्जना कर्म, राज्य संरक्षण, मातृगुप्त, कालिदास, छायावादी कविता, नई कविता।

1. प्रस्तावना

स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन दोनों नाटकों के प्रकाशन वर्षों के बीच लगभग तीस वर्षों का अंतर है। जहां स्कंदगुप्त स्वाधीनता के पहले का है और उसके ऊपर छायावादी कविता का प्रभाव दिखाई पड़ता है वहीं आषाढ़ का एक दिन स्वाधीनता के बाद का है और उसके ऊपर नई कविता का प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार दोनों नाटक दो काव्यांदोलनों के छोर को निर्धारित करते हैं। स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन दोनों नाटकों में सर्जनात्मक कर्म का उल्लेख किया गया है । जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश ने अपने नाटकों के माध्यम से सर्जना कर्म और राज्य सत्ता दोनों का तुलनात्मक रूप से चित्रण किया है।

जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में स्कंदगुप्त का प्रमुख स्थान है । इसका प्रकाशन सन 1928 ईस्वी में हुआ। इस नाटक के पहले अंक के तीसरे दृश्य में मातृगुप्त का प्रवेश होता है जिसके अंदर सर्जना कर्म का भाव दिखाई पड़ता है। नाटककार ने नाटक में उसे एक कवि के तौर पर प्रस्तुत किया है । यह स्कंदगुप्त की तरह ही एक ऐतिहासिक पात्र है । नाटक में मातृगुप्त का चरित्र एक रोमांटिक कवि के रूप में उभर कर सामने आता है। वह अपने जीवन को कवि जीवन के विकल्प के रूप में चुनता है। कविता लिखने के कारण उसे अभावग्रस्त और कष्टमय जीवन भी व्यतीत करना पड़ता है। मातृगुप्त ने प्रकांड बौद्ध पंडित दिंगनाक को शास्त्रार्थ में पराजित किया था जिसके कारण वह राज्यसभा का प्रशंसा पात्र भी बना । वह कहता है 'कविता करना अनंत पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनंत उत्कंठा से कवि जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई । संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा।... भारत के प्रकांड बौद्ध पंडित को परास्त करने में मैं सबकी प्रशंसा का भाजन बना।'[1] मातृगुप्त भावुक साहित्य प्रतिभाशाली और दार्शनिक प्रवृत्ति का चरित्र है। काव्य साधना ही उसके जीवन का मूल उद्देश्य है । वह कविता को परिभाषित करते हुए कहता है 'कविता वर्णन में चित्र है जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है अंधकार का आलोक से असत्य का सत्य से और बाह्य जगत का अंतर्जगत से संबंध कौन कराती है, कविता ही न।'[2] यहां मातृगुप्त के चरित्र पर कहीं न कहीं तत्कालीन छायावादी काव्य प्रवृत्ति का प्रभाव दिखाई

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 12-15, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

पड़ता है । मातृगुप्त का राजनीति में प्रवेश धातुसेन और मुद्गल की प्रेरणा से होता है । वह अपनी जन्मभूमि छोड़कर गुप्त साम्राज्य की राजधानी में रहता है । अपने जन्मभूमि को याद करते हुए वह कहता है 'कश्मीर जन्मभूमि जिसकी धूलि में लोटकर खड़े होना सीखा, जिसमें से खेल कर शिक्षा प्राप्त की, जिसमें जीवन के परमाणु संगठित हुए थे वहीं छूट गया।'[3] इसके माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने इतिहास और संस्कृति के आवरण में देश प्रेम और स्वाधीनता आंदोलन को जोड़ा है।

मातृगुप्त छायावादी कवियों की तरह प्रकृति प्रेमी है । वह पर्वत और समुद्र के प्राकृतिक सौंदर्य को उद्घाटित करते हुए उसे सभ्यता और संस्कृति से जोड़ता है । मातृगुप्त के विषय में धातुसेन का विचार है कि उनकी कोमल कल्पना वाणी की वीणा में झंकार उत्पन्न करती है । मातृगुप्त प्राकृतिक सौंदर्य उद्घाटित करते हुए कहता है 'अमृत के सरोवर में स्वर्ण कमल खिल रहा था, भ्रमण वंशी बज रहा था, सौरभ की चहल–पहल ।'[4]

इस नाटक मातृगुप्त में की प्रेमिका मालिनी है । वह मातृगुप्त के कवि कर्म की मूल प्रेरणा है । वह स्थितिवश वेश्या बन जाती है । यह घटना मातृगुप्त के जीवन की सबसे बड़ी वेदना बन जाती है । फिर भी मालिनी हमेशा मातृगुप्त के स्मृति में बनी रहती है । वह कहता है 'मैं आज तक तुम्हें पूजता था । तुम्हारी पवित्र स्मृति को कंगाल की तरह छुपाए रहा । ...मैं इतना दृढ़ नहीं हूं कि तुम्हें इस अपराध के कारण भूल जाऊं।'[5] मातृगुप्त का मालिनी के प्रति प्रेम किसी ने किसी छायावादी कवि की भावुक प्रेम से प्रभावित दिखाई पड़ता है। स्कंदगुप्त नाटक में जयशंकर प्रसाद द्वारा यह प्रेम कहीं न कहीं कामायनी का सूत्र प्रस्तुत कर रहा है जिसमें प्रसाद जी ने नारी को 'तुम केवल श्रद्धा हो' की दृष्टि से देखने की कोशिश की है।

मातृगुप्त के व्यक्तित्व का रेखाचित्र कुमारदास ने सूक्ष्मता के साथ खींचा है । वह गोरे रंग का है, लंबा है, भौंहे खींची हुई हैं, लटें घुंघराली हैं, मन में हिमालय की स्मृतियां हैं । इन स्मृतियों के कारण वह केवल कवि ही नहीं बल्कि देशभक्ति से भी बहुत प्रभावित दिखाई पड़ता है । भटार्क को बंदी बनाने में वह गोविंदगुप्त की सहायता करता है । मातृगुप्त प्रपंचबुद्धि के चंगुल से देवसेना को आजाद करता है जिससे प्रसन्न होकर स्कंदगुप्त उसे कश्मीर का शासक बना देता है यही उसके लिए पुरस्कार था । मातृगुप्त उद्बोधन गीत गाता है । विजया मातृगुप्त से कहती है 'सुना दो वह संगीत जिससे पहाड़ हिल जाए और समुद्र काँप कर रह जाए, अंगड़ाइयां लेकर मुचकुंड की मोह निद्रा से भारतवासी जाग पड़े ।'[6] मातृगुप्त और विजया का यह संवाद छायावादी काव्य प्रवृत्ति लोक जागरण को ध्वनित करती है । इस उद्बोधन गीत के माध्यम से जयशंकर प्रसाद स्वाधीनता आंदोलन में शामिल सेनानियों को जागृत करने का प्रयास करते हैं । यह प्रवृत्ति निराला की कविताओं में भी दिखाई पड़ती है जिसमें उनकी प्रसिद्ध कविता 'जागो फिर एक बार' को याद किया जा सकता है।

जयशंकर प्रसाद ने स्कंदगुप्त नाटक में मातृगुप्त का चरित्र चित्रण करके कहीं न कहीं छायावादी कवि की भावनाओं को प्रस्तुत किया है जिसमें उसकी भावुकता सहृदयता, कल्पना, दार्शनिक प्रवृत्ति, देश प्रेम, प्रकृति प्रेम और लोक जागरण चेतना दिखाई पड़ती है । इस नाटक में प्रसाद ने मातृगुप्त का चित्रण व्यापक रूप में नहीं किया है फिर भी उसकी उपस्थिति नाटक को संपूर्णता प्रदान करती है। स्कंदगुप्त के मातृगुप्त की तरह ही तीस वर्षों के बाद नई कविता आंदोलन के बीच मोहन राकेश ने अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में सर्जना कर्म बनाम राज सत्ता को केंद्र में रखकर लिखा जिसका प्रमुख पात्र कालिदास मातृगुप्त की तरह ही कवि के तौर पर चित्रित किया गया है । मोहन राकेश ने इस नाटक में नई कविता की प्रवृत्तियों के आधार पर कालिदास के चरित्र को प्रस्तुत किया है । आषाढ़ का एक दिन सन 1958 में प्रकाशित होता है । यह मोहन राकेश का प्रौढ़ नाटक है । इस नाटक में कालिदास का चरित्रकांन नाटक के प्रथम अंक में हो जाता है । कालिदास इस नाटक का नायक है । वह भावुक, संवेदनशील, संकोची और आत्मलीन चरित्र वाला पात्र है । वह सामाजिक दायित्वों से दूर रहकर प्रकृति की गोद में विलास करता हुआ काव्य रचता है । कालिदास का चित्रण प्रकृति के अछूते कलाकार के रूप में हुआ है। वह प्रकृति और मनुष्य के बीच साहचार्य स्थापित करता है । वह कहता है 'हम जिएंगे हरिण शावक ! जिएंगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे।'[6] नाटक में कालिदास के कवि प्रतिभा का मिसाल 'ऋतुसंहार' है जिसका यश गुप्त साम्राज्य की राजधानी उज्जैन तक फैला हुआ है । कालिदास अपनी काव्य सर्जना गांव से बाहर जगदंबा मंदिर में बैठकर करता है । उसको मल्लिका और ग्रामीण वातावरण से विशेष प्रेम है । उसकी संवेदना में मल्लिका और ग्रामीण वातावरण ही नहीं बल्कि घायल हरिण शावक, मिट्टी, पेड़ पौधे, वारांगनाएं और प्रियंगुमंजरी आदि समाहित हो जाते हैं । वह राजधानी में सम्मान ग्रहण करने नहीं जाना चाहता । वह कहता है 'मैं अनुभव करता हूं कि यह ग्राम प्रांतर मेरी वास्तविक भूमि है, मैं कई सूत्रों से इस भूमि से जुड़ा हूं, उन सूत्रों में तुम हो यह आकाश और यह मेघ हैं यहां की हरियाली है, हरिणों के बच्चे हैं, पशुपालन है।'[7]

कालिदास का जीवन बचपन से अभावग्रस्त और कष्ट में व्यतीत हुआ । वह राज्य संरक्षण पाकर अपने अतीत को भुला देना चाहता है । वह मल्लिका के प्रति अपने दायित्वों को भूल जाता है । कालिदास राज्यसभा के वरांगना के सहवास

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 02, Issue: II, Pages: 12-15, Year: 2024
ISSN- 2583-8830

और प्रियंगुमंजरी के अधिवास में अपने को भुला देता है । नाटक में अनुस्वार से स्पष्ट होता है कि कालिदास का नाम कश्मीर का शासन संभालने पर मातृगुप्त हो जाता है । आगे प्रियंगुमंजरी इसे पुष्ट कर देती है । मातृगुप्त के रूप में सत्ता सुख भोगने का मौका पाते ही वह अपने वास्तविकता को भूल जाता है । मातृगुप्त के रूप में वह गांव आकर भी मल्लिका से नहीं मिलता है जब वह स्वयं संकट में फंस जाता है तो मल्लिका को पाने के लिए उसके पास आता है । वह मल्लिका से कहता है संभवत पहचानती नहीं हो और ना पहचान नहीं स्वाभाविक है, क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूं, जिसे तुम पहले पहचानती रही हो दूसरा व्यक्ति हूं और सच कहूं तो वह व्यक्ति हूं जिसे मैं नहीं पहचानता।'[8]

आषाढ़ का एक दिन' के पात्र कालिदास के व्यक्तिवांतरण के माध्यम से राज्य सत्ता और सृजनात्मक सत्ता के बीच द्वंद दिखाई पड़ता है । कालिदास सत्ता और प्रभुता के बंधन से मुक्त होना चाहता है । यह बंधन उसे कई वर्षों से दुख पहुंचाता रहा है। वह मल्लिका से कहता है 'मैं केवल मातृगुप्त के कलेवर से मुक्त हुआ हूं, जिससे पुनः कालिदास के कलेवर में जी सकूं।'[9] जहां स्कंदगुप्त के मातृगुप्त की सर्जना की मूल प्रेरणा मालिनी है, वहीं आषाढ़ का एक दिन के कालिदास की प्रेरणा मल्लिका है । जहाँ स्कंदगुप्त में मातृगुप्त और मालिनी के प्रेम का संबंध भावनात्मक रूप में है वहीं आषाढ़ का एक दिन में कालिदास और मल्लिका का प्रेम द्वंद्वात्मक है।

स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन दोनों नाटकों में इन पात्रों को नाटक के अन्य पात्रों अपनी–अपनी दृष्टि से देखते हैं । जहाँ स्कंदगुप्त में मातृगुप्त को मालिनी, विजया, स्कंदगुप्त अपनी–अपनी दृष्टि से देखते हैं वहीं आषाढ़ का एक दिन में अंबिका, मातुल, दंतुल, विलोम और प्रियंगुमंजरी आदि कालिदास को अपनी दृष्टि से देखते हैं । वह सभी उसकी मूल प्रकृति को नहीं जान पाते और गलत निष्कर्ष निकालते रहे । अंबिका मल्लिका से कहती है – 'वह व्यक्ति आत्मसीमित है, संसार में अपने सिवा उसे और किसी से मोह नहीं सम्मान पाने के बाद मल्लिका को भूल जाता है । तब अंबिका का यह कथन सही साबित हो जाता है जब वह अपने अतीत को बनाने के लिए वापस मल्लिका के पास आता है लेकिन मल्लिका उसे अपना नहीं बना पाती क्योंकि वह विलोम के बच्चे की मां बन गई होती है । यह जानकर कालिदास वहां से धीरे से निकल जाता है । इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास कवि हृदय, भावुक, संवेदनशील संकोची, आत्मलीन, प्रकृति प्रेमी आदि के रूप में आषाढ़ का एक दिन में चित्रित किया गया है। स्कंदगुप्त और आषाढ़ का एक दिन में मातृगुप्त और कालिदास का मातृगुप्त होना जैसे कवि पात्रों के माध्यम से दो बड़े काव्यांदोलनों को छुआ गया है। दोनों नाटकों के चरित्र कवि प्रतिभा और सर्जना से जुड़ा है। उनके सर्जना में अभावग्रस्त और कष्टमय जीवन की भूमिका है। काश्मीर दोनों पात्रों के जीवन से जुड़ा है। उनकी कविता सुरम्य प्रकृति से जुड़ी है। काव्य सर्जना की मूल प्रेरणाएं दोनों की प्रेमिकाएं हैं। दोनों पात्रों में अंतर काव्यांदोलन की वजह है। स्कंदगुप्त के मातृगुप्त पर छायावादी काव्य प्रवृत्तियों का प्रभाव है जबकि आषाढ़ का एक दिन के कालिदास यानी मातृगुप्त पर नई कविता का प्रभाव है।

2. निष्कर्ष

स्कंदगुप्त नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक होते हुए भी वह इस अर्थ में समकालीन है कि उसे प्रसाद में अपने समय की राष्ट्रीय स्थितियों से प्रेरित होकर लिखा है । राष्ट्र उत्थान की भावना इस नाटक की मूल चिंता है । पराधीनता से राष्ट्र मुक्ति और इसके लिए सामूहिक प्रयत्न को उन्होंने प्रस्तुत किया है जिसमें मातृगुप्त का चरित्र सामने उभर कर आता है । आषाढ़ का एक दिन का कालिदास भावना में होते हुए भी व्यवहारवादी नजर आता है । वह इस अर्थ में समकालीन है कि स्वतंत्रता के बाद विकसित हो रहे उपभोक्तावादी मध्य वर्ग का प्रतिनिधि है । उसे स्त्री–पुरुष संबंध को लेकर द्वंद्व है । राज सत्ता और सर्जक सत्ता में भी द्वंद्व है । इसके माध्यम से मोहन राकेश ने सामाजिक संबंधों में होने वाले बदलाव को चित्रित करने का प्रयास किया है । साथ ही स्त्री–पुरुष संबंधों को दिखाने का प्रयास किया गया है । स्वतंत्र भारत का मध्य वर्गीय संघर्ष जिसमें खालीपन, कटुता, अलगाव और अकेलापन शेष रह जाता है । इसी को आषाढ़ का एक दिन की विषय–वस्तु बनाकर मोहन राकेश ने प्रस्तुत किया दोनों चरित्रों की तुलना करने पर आषाढ़ का एक दिन का नायक कालिदास समकालीन परिदृश्यों में अधिक प्रासंगिक जान पड़ता है।

3. संदर्भ ग्रन्थ

पृष्ठ– 32, स्कंदगुप्त–जयशंकर प्रसाद, प्रकाशन–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. वही, 33
3. वही, 34

ISSN- 2583-8830

4. वही, 93
5. वही, 98
6. पृष्ठ–46,आषाढ़ का एक दिन–मोहनराकेश, प्रकाशन–राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. वही, 95
8. वही, 97
9. वही, 25

Corresponding Author:
डॉ. रजनीश कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक,
राजेंद्र कॉलेज, छपरा,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा